Bipolar Nature of Reality – An-International Journal **ISSN 2394-6059**
(BNRAIJ) 2016 Vol.2, Issue No. 1, JAN-JUNE.

उच्चत्तर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

(A comparative study of Boys and Girls students at Senior Secondary Level of their Adjustment)

प्रेम प्रकाश पाण्डेय
निदेशक डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय
हसनगढ़।
शोधछात्र
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भोपाल परिसर

सारांश

वर्तमान अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में समायोजन स्तर का मापन छात्रों के गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन, भावात्मक समायोजन एवं विद्यालय समायोजन के माध्यम से किया गया है। जिसके लिए एम.एल.एस. सक्सेना निर्मित समायोजन अनुसूचि का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष ज्ञात हुआ कि छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में बहुत ही कम अन्तर होता है। दोनों का समायोजन स्तर लगभग समान ही होता है।

भूमिका

जीवन को सुसंस्कृत, सभ्य एवं विवेकशील बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। क्योंकि शिक्षा किसी समाज में चलने वाली वह सोद्देश्य प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं श्रेष्ठ नागरिक बनाया जाता है। जिसके माध्यम से व्यष्टि, देश एवं समाज सभी निरन्तर विकास करते है। क्योंकि ड्रेवर का यह मानना था कि **''शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें एंव जिसके द्वारा नवयुवकों के ज्ञान चरित्र एवं व्यवहार को निर्मित एवं परिवर्तित किया जाता है।''**

शिक्षा मानव व्यवहार का परिशोधन एवं परिमार्जन कर इस योग्य बनाती है कि वह अपने वातावरण में समायोजित होकर अपनी शक्तियों तथा निहित योग्यताओं का पूर्ण विकास कर योग्यतानुसार अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र को किसी विशिष्ट क्षेत्र में योगदान कर सके।

क्रो एवं क्रो ने शिक्षा को व्यक्तिकरण एवं सामाजीकरण की प्रक्रिया के रूप में माना है। जो कि व्यक्ति की व्यक्तिगत उन्नति एवं समायोजन क्षमता को बढ़ावा देती है। वर्तमान कालीन शिक्षा में छात्रों में समायोजन क्षमता का अभाव

देखने को मिलता है। उनमें भी खासकर उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों में क्योंकि यह संक्रमण का काल होता है जिसमें छात्र संघर्ष एवं तनाव की स्थिति में रहता है। जिसका परिणाम यह हो रहा है छात्र आत्महत्या जैसे कदम भी उठा लेते हैं। छात्र अपने आप को परिस्थिति एवं वातावरण के अनुरूप ढालने में पूर्णतया सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। अतः उनमें समायोजन क्षमता का विकास करके उन्हें परिस्थिति एवं वातावरण में समायोजित होने लायक बनाया जा सकता है।

समायोजन का अर्थ एवं परिभाषा

समाज में रहने के लिए प्रत्येक मनुष्य को अपने रीति, परम्परा एवं नियम इत्यादि को सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप परिवर्तित करना पड़ता है जोकि समायोजन की प्रक्रिया होती है। समायोजन को ही समंजन, सामजस्य, व्यवस्थापन एवं अनुकूलन आदि नामों से जाना जाता है। समायोजन दो शब्दों **सम** + **आयोजन** का योग है। जिसमें **सम** का अर्थ है – सम्यक् प्रकार से, समान रूप से तथा **आयोजन** का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् सम्यक प्रकार की व्यवस्था समायोजन होती है। समायोजन की प्रक्रिया जन्म से प्रारंभ होकर मृत्युपर्यन्त चलती रहती है। प्राचीन काल से ही समाज को व्यवस्थित एवं समायोजित रूप से चलाने के लिए धर्म का विधान किया गया है। मनुस्मृति में धर्म के लक्षण के विषय में कहा गया है कि –

घृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः
धीर्विद्याः सत्यमक्रोधो दशकम् धर्मलक्षणम् (मनुस्मृतिः) 6,92

समाज में सुसमायोजित रूप से रहने के लिए व्यक्ति को धैर्य, क्षमा, दया, आस्तेय, पवित्रतः, इन्द्रियों को वश में करना, बुद्धि, विद्या, सत्य एवं क्रोध न करना इत्यादि गुणों का पालन व्यवहार में करना पड़ता है।

समायोजन एक द्विपक्षीय प्रक्रिया होती है जो निरन्तर चलती रहती है। जिसमें व्यक्ति स्वयं एवं पर्यावरण के मध्य सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध स्थापन के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। समायोजन को परिभाषित करते हुए रयूटर एवं हार्ट ने कहा है कि – **''समायोजन एक प्रक्रिया के रूप में प्रयत्नों का वह क्रम है जिसके द्वारा मनुष्य परिवर्तित अवस्थाओं द्वारा आवश्यक बन गई आदतों एवं मनोवृत्तियों का निर्माण करके जीवन की परिवर्तित अवस्थाओं में सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं।**

इस प्रकार समायोजन एक प्रक्रिया होती है जहां व्यक्तियों के विचारों में परिवर्तत लाकर परस्पर सहयोग के लिए तैयार किया जाता है। जीवन के प्रत्येक स्तर पर समायोजन का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान होता है। समायोजन के अन्तर्गत छात्रों के गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं भावात्मक समायोजन एवं विद्यालय समायोजन का अध्ययन किया गया है।

 ISSN 2394-6059

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

आधुनिक काल के जटिल समाज में जहां तरह–तरह के विरोधी समूह, विचार, जाति एवं वर्ग इत्यादि है वहां समायोजन की प्रक्रिया का विशेष महत्व है। समायोजन वर्तमान समाज में व्यवस्था एवं संतुलन बनाए रखने में बहुत मददगार साबित हो सकता है। इस प्रकार समायोजन वर्तमान समाज का अनिवार्य तत्व है।

व्यक्तियों को परिस्थितियों का ज्ञान कराने तथा उसके अनुकूल आचरण करने के लिए समायोजन का गुण होना अति आवश्यक है। क्योंकि समायोजन के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन एवं कार्यों में संतुलन बनाता है, सामाजिकता के अनुकूल व्यवहार करता है, अपने को चरित्रवान बनाता है तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का सही ढंग से निर्वाह करता है, अपने को चरित्रवान बनाता है तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का सही ढंग से निर्वाह करता है। यूवा पीढ़ी पर ही देश का भविष्य टिका होता है। अतः युवा वर्ग के लिए समायोजन की अत्यन्त ही आवश्यकता है। इसलिए अध्ययन कर्ता ने अपने अध्ययन विषय के रूप में समायोजन का चयन किया।

समस्या कथन

वर्तमान अध्ययन को निम्न शीर्षक प्रदान किया गया है।

''उच्चत्तर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' (A comparative study of Boys and Girls students at Senior Secondary Level of their Adjustment)

अध्ययन का उद्देश्य

1 उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना

(1a) उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के गृह समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(1b) उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(1c) उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(1d) उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के सांवेगिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(1e) उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

 ISSN 2394-6059

अध्ययन की परिकल्पना

1.1 उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.2 उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के गृह समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.3 उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

1.4 उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के भावात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन का सीमांकन

इस अध्ययन के लिए हरियाणा राज्य के रोहतक जिले के अन्तर्गत आने वाले विद्यालयों में से दो विद्यालयों डी.ए.वी. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हसनगढ़ एवं डी.आई.पी.एस. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हसनगढ़ का चयन किया गया है तथा उन विद्यालयों में पढ़ने वाले केवल उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अतीत की घटना वर्तमान के लिए आधारशीला होती है। अतीत से शिक्षा लेकर वर्तमान काल में काय को सम्पादित करना बुद्धिजीवी के लक्षण है।

W.R. Burg (डब्ल्यू. आर. वर्ग के अनुसार) ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशीला के समान होता है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य को निष्प्रभावी एवं महत्वहीन होने की सम्भावना है अथवा यह पुनरावृत भी हो सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन से संबंधित विषय जो अध्ययन किए गए वे निम्न है :–

शाह बीना (1989)–किशोरावस्था छात्रों के गृह समायोजन में पारिवारिक वातावरण की भूमिका का अध्ययन।

इस अध्ययन का निष्कर्ष – छात्रों के गृह समायोजन का पारिवारिक वातावरण के साथ सार्थक सह–संबंध होता है।

अन्जू (2001) ''एकीकृत शिक्षा प्रणाली में दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित एवं अस्थिग्रस्त बालकों की समायोजन क्षमता का अध्ययन''।

अपने अध्ययन के निष्कर्ष में यह ज्ञात किया कि एकीकृत शिक्षा प्रणाली में दृष्टिबाधित बालकों तथा श्रवण बाधित बालकों की समायोजन क्षमता सामान्य से कम होती है। जबकि अस्थिग्रस्त बालकों की समायोजन क्षमता सामान्य होती है।

 ISSN 2394-6059

आलोक (2002) ''संस्कृत एवं आधुनिक छात्रों के व्यक्तित्व एवं समायोजन पक्ष का तुलनात्मक अध्ययन।''

अध्ययन के निष्कर्ष में यह ज्ञात किया कि संस्कृत एवं आधुनिक छात्रों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर था। जबकि संस्कृत के बालक छात्रों एवं बालिका छात्रों तथा आधुनिक के बालक एवं बालिका छात्रों के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं था।

मेहरोत्रा (2002) ''शिक्षक समायोजन एवं अपने कार्य से सन्तुष्टि का अध्ययन'' निष्कर्ष में यह पाया गया कि जो अध्यापक विद्यालय में सम्यक रूप से समायोजित होते है वे स्वयं के कार्यों से भी संतुष्ट रहते हैं।

देवेश (2003)– ''व्यक्तित्व के विकास में आयु संस्कृति एवं समायोजन की भूमिका'' निष्कर्ष में यह पाया कि व्यक्तित्व विकास में समायोजन एवं संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अध्ययन विधि

इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का सम्बन्ध समस्या के वर्तमान पक्ष से होता है। इस विधि में वर्तमान के तत्वों तथा परिस्थितियों के संबंध में व्यक्तियों, वस्तुओं एवं घटनाओं के विषय में प्रदत्त एकत्रित कर उनका विश्लेषण, विवेचन, वर्गीकरण एवं मापन आदि का कार्य किया जाता है।

न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि

इस अध्ययन के लिए यादृच्छिक न्यादर्श विधि (Random Sampling Method) के प्रयोग द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया।

मापन उपकरण

प्रस्तृत अध्ययन के लिए एम.एल.एस. सक्सेना निर्मित समायोजन अनुसूचि का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का संग्रहण

अध्ययन कर्ता ने विद्यालयों में जाकर समायोजन अनुसूचि का प्रयोग कर प्रदत्तों का संग्रहण किया। संग्रहण के उपरान्त उनका विश्लेषण एवं व्याख्या किया गया जो निम्न है

प्रदत्तों का विश्लेषण, व्याख्या एवं परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना क्रमांक 1

''उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

 ISSN 2394-6059

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण किया गया। प्राप्त मान आगे की तालिका में दिया गया है –

तालिका क्रं0 1

छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर का ज परीक्षण

वर्ग	N	M	Sd	Df	T
छात्र	50	81.4	6.84	98	13.764
छात्राएँ	50	67.03	7.91		

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

विश्लेषण

यहां छात्रों के समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान 81. 4 एवं मानक विचलन 6.84 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार छात्राओं के समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान् 67.03 एवं मानक विचलन 7.91 प्राप्त हुआ। दोनों का ज परीक्षण करने पर प्राप्त टी मान 13.764 प्राप्त हुआ जोकि 0. 01 सार्थकता स्तर पर सार्थक था।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1 ''उच्च माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है अस्वीकृत की जाती है।

व्याख्या- क्योंकि परिकल्पना अस्वीकृत हो गई अतः छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर होता है। क्योंकि छात्रों का मध्यमान छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः छात्रों का समायोजन स्तर छात्राओं की अपेक्षा बेहतर होती है।

परिकल्पना क्र. 1.1

''उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के गृह समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण किया गया। प्राप्त मान आगे की तालिका में दिया गया है –

तालिका क्रं0 2

छात्र एवं छात्राओं के गृह समायोजन स्तर का ज परीक्षण

वर्ग	N	M	Sd	Df	T
छात्र	50	19.38	2.48	98	2.187
छात्राएँ	50	18.26	2.65		

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

 ISSN 2394-6059

विश्लेषण

यहां छात्रों का गृह समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान 19.38 एवं मानक विचलन 2.48 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार छात्राओं के गृह समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान् 18.26 एवं मानक विचलन 2.65 प्राप्त हुआ। दोनों का t परीक्षण करने पर प्राप्त टी मान 2.187 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1.1 ''उच्च माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के गृह समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है स्वीकार की जाती है।

व्याख्या– क्योंकि परिकल्पना स्वीकृत हो गई अतः छात्र एवं छात्राओं के गृह समायोजन में कोई सार्थक भेद नहीं होता है। चूंकि छात्रों का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। परन्तु यह केवल संयोगवश है न कि स्वाभाविक रूप से। अतः छात्र एवं छात्राओं का समायोजन स्तर समान होता है।

परिकल्पना क्र. 1.2

''उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण किया गया। प्राप्त मान आगे की तालिका में दिया गया है –

तालिका क्रं0 3

छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन स्तर का ज परीक्षण

वर्ग	N	M	Sd	Df	t
छात्र	50	18.72	2.85	98	1.619
छात्राएँ	50	17.86	2.46		

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

विश्लेषण

यहां छात्रों के स्वास्थ्य समायोजन के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान 18.72 एवं मानक विचलन 2.85 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान् 17.86 एवं मानक विचलन 2.46 प्राप्त हुआ। दोनों का t परीक्षण करने पर प्राप्त टी मान 1.619 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1.2 ''उच्च माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है स्वीकार की जाती है।

व्याख्या– क्योंकि परिकल्पना स्वीकृत हो गई अतः छात्र एवं छात्राओं के स्वास्थ्य समायोजन में कोई सार्थक भेद नहीं होता है। यद्यपि छात्रों का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। लेकिन यह केवल संयोगवशात है न कि स्वाभाविक रूप से। अतः छात्र एवं छात्राओं का समायोजन स्तर समान ही है।

परिकल्पना क्र. 1.3

''उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण किया गया। प्राप्त मान आगे की तालिका में दिया गया है –

तालिका क्रं0 4

छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर का ज परीक्षण

वर्ग	N	M	Sd	Df	t
छात्र	50	18.2	3.11	98	1.509
छात्राएँ	50	17.4	2.10		

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

विश्लेषण

यहां छात्रों के सामाजिक समायोजन के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान 18.2 एवं मानक विचलन 3.11 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान् 17.4 एवं मानक विचलन 2.10 प्राप्त हुआ। दोनों का t परीक्षण करने पर प्राप्त टी मान 1. 509 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1.3 ''उच्च माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है स्वीकृत की जाती है।

व्याख्या– क्योंकि परिकल्पना स्वीकृत हो गई अतः छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक भेद नहीं होता है। यद्यपि छात्रों का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। लेकिन यह केवल संयोगवश है न कि स्वाभाविक रूप से। अतः छात्र एवं छात्राओं का समायोजन स्तर समान होता है।

परिकल्पना क्रमांक 1.4

''उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के भावात्मक समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण किया गया। प्राप्त मान आगे की तालिका में दिया गया है –

 ISSN 2394-6059

तालिका क्रं0 5

छात्र एवं छात्राओं के भावात्मक समायोजन स्तर का ज परीक्षण

वर्ग	N	M	Sd	Df	t
छात्र	50	19.1	2.86	98	4.351
छात्राएँ	50	18.16	2.71		

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

विश्लेषण

यहां छात्रों के भावात्मक समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान 19.1 एवं मानक विचलन 2.86 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार छात्राओं का भावात्मक समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान् 18.16 एवं मानक विचलन 2.71 प्राप्त हुआ। दोनों का t परीक्षण करने पर प्राप्त टी मान 4. 351 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक था।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1.4 ''उच्च माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के भावात्मक समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता, अस्वीकृत की जाती है।

व्याख्या– क्योंकि परिकल्पना अस्वीकृत हो गई अतः छात्रों एवं छात्राओं के भावात्मक समायोजन स्तर में सार्थक भेद पाया जाता है। छात्रों का मध्यमान छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। अतः छात्रों का भावात्मक समायोजन स्तर छात्राओं की अपेक्षा बेहतर होती है।

परिकल्पना क्र. 1.5

''उच्चतर माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है।''

इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण किया गया। प्राप्त मान आगे की तालिका में दिया गया है –

तालिका क्रं0 4

छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय समायोजन स्तर का ज परीक्षण

वर्ग	N	M	Sd	Df	t
छात्र	50	18.46	3.04	98	1.729*
छात्राएँ	50	17.5	2.50		

'0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

विश्लेषण

यहां छात्रों के विद्यालय समायोजन के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान 18.46 एवं मानक विचलन 3.04 प्राप्त हुआ। उसी प्रकार छात्राओं के विद्यालय समायोजन स्तर के सन्दर्भ में प्राप्त प्रदत्तों का मध्यमान् 17.5 एवं मानक विचलन

 ISSN 2394-6059

2.50 प्राप्त हुआ। दोनों का ज परीक्षण करने पर प्राप्त टी मान 1.729 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

अतः परिकल्पना क्रमांक 1.5 ''उच्च माध्यमिक स्तर में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय समायोजन स्तर में सार्थक अन्तर नहीं होता है स्वीकृत की जाती है।

व्याख्या– क्योंकि परिकल्पना स्वीकृत हो गई अतः छात्र एवं छात्राओं के विद्यालय समायोजन स्तर में कोई सार्थक भेद नहीं होता है। हालांकि छात्रों का मध्यमान छात्राओं के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है। लेकिन ऐसा केवल संयोगवशात है न कि स्वाभाविक रूप से। अतः छात्र एवं छात्राओं का विद्यालय समायोजन स्तर समान होता है।

निष्कर्ष निरूपण

इस अध्ययन में अध्ययन कर्ता ने रोहतक जिले के दो स्कूलों के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया है। इसमें छात्रों के गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन, भावात्मक समायोजन एवं विद्यालय समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

अध्ययन का मुख्य उद्देय यह ज्ञात करना था कि छात्र एवं छात्राओं में किसका समायोजन स्तर बेहतर होता है। अध्ययन पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में अन्तर पाया जाता है लेकिन समायोजन के विभिन्न आयामों में केवल भावात्मक समायोजन को छोड़कर कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं के समायोजन स्तर में तो कुछ सार्थक भेद होता है लेकिन समायोजन के विभिन्न आयामों जैसे – गृह समायोजन, स्वास्थ्य समायोजन, सामाजिक समायोजन एवं विद्यालय समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। केवल भावनात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उच्च्तर माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों को छात्रों के समायोजन स्तर में सुधार के लिए कुछ प्रयास करने चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

कपिल ए.के. अनुसन्धान विधियाँ, अर्चना प्रिन्टर्स, आगरा, 1993

गुप्ता एस.सी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदापुस्तक भवन, 11 विश्वविद्यालय रोड़, इलाहाबाद, 2001

 ISSN 2394-6059

जायसवाल सीताराम भारतीय मनोविज्ञान एवं शिक्षा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली, 2004

तिवारी एवं पाल प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, विनोदपुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, 1986

तुलसीदास रामचरितमानस, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2002

दास स्वामी रामसुख गीता प्रबोधिनी, गीताप्रेस, गोरखपुर, 2004

पाण्डेय, के.पी. शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी – 2006

प्रो. त्रिपाठी ए हैण्डबुक ऑन एजुकेशन रिसर्च, एस.एन. सम्पादित, एन.सी.टी.ई. 46/1999, नई दिल्ली।

पाल हंसराज प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यक्रम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 2006

मिश्र, गिरीश्वर एवं जैन उदय समाज मनोविज्ञान के मूलाधार, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल, 1993

****